लाल किले से प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू
द्वारा दिया गया भाषण

दिनांक:- 15-8-55

बहनों और भाइयों, हम वतनों,

आज हम फिर, नये भारत, आजाद भारत के सालगिरह पर यहां जमा हुये हैं। मुबारिक हो आपको और हमको, यह नये हिन्द की साल गिरह।

याद है आपको वो दिन जब कि हम इस मंजिल पर पहुंचे बाद लम्बे सफर के, बाद लंबे नीच के कितने लोग उस सफर में ठोकर खाके गिर गये। फिर उठे। फिर चले। याद हैआपको जो हम ख्वाब देखा करते थे दिल में आरजूं थीं और फिर वो दिन आया जब कि वो ख्वाब और वो आरजूये पूरी हुई और आजाद हिन्दुस्तान का आफताब निकलते हमने देखा। आठबरस हुये। ये बात हुई थी। और आपने और हमने और सारे हिन्दुस्तान ने खुशी मनाई थी।

खुशी मनाई थी लेकिन उसी खुशी मनाते मनाते आंखों में आंसू आ गये, ऐसी बातें हमारे मुल्क में, और मुल्क के सरहद पर हुई। कितने हमारे भाई मुसीबत जदा यहां आये, शरणार्थी होके। यहां और पाकिस्तान में दोनों तरफ एक मुसीबत का सामना करना पड़ा। खैर उसकी भी हमने बरदाश्त की उन सवालों को भी हल करने की कोशिश की, और बहुत कुछ कामयाबी से, और जो कुछ बाकी है वो भी यकीनन हल होंगे। इस तरह से यह आठ

बरस गुजरे । ऊंचे और नीच । कुछ सोचिये । आठ बरस हुये क्या हमारे मुल्क का और हमारा हाल था । दुनियां की निगाहों में, हमारी निगाहों में । और अब आप उस तस्वीरे को देखें, क्या फर्क है ।

आजाद हिन्द का एक कम उम्र का बच्चा अब तक हैं "----हालांकि हमारा मुल्क तो हजारों बरस पुराना है । ----लेकिन इस बचपन में ही इसने जो जो बातें दिखाई जो ताकत और जो आगे बढ़ने की शक्ति दिखाई, वो दुनियां को मालूम है । तो आज जो हम यहां मिलते हैं तो कुछ इस पिछले जमाने की तरफ देखते हैं आठ बरस के और ज्यादातर आगे देखते हैं । क्या हमने किया, क्या हमें करना बाकी है । बाकी तो बहुत है हमें करना और खासतौर से जो हममें कमजोरियांहैं उनकी तरफ ध्यान देते हैं । क्योंकि जित्ते हम अपनी कमजोरियों को दूर करेंगे जित्ते हम अपनी ताकत बढ़ायेगें उत्ते ही मुल्क आगे बढ़ेगा, और हमारे देश की जनता का भला होगा ।

दुनियां की तरफ आप देखें हमाराहाथ किसी दूसरे देश की तरफ, किसी दूसरे देश के खिलाफ, विरोध में नहीं उठा है । और मैं उम्मीद करता हूं कि हमारे हाथ कभीकिसी दूसरे देश के विरोध में और खिलाफ न उठें ।

हमने हर एक मुल्क की तरफ दोस्ती की निगाह से देखा और दोस्ती का हाथ बढ़ाया । हां कुछ सवाल इधर उधर हुये पेचीदा सवाल, जो कि कुछ रास्ते में आये, लेकिन उससे भी वो भी कोई वजह नहीं है कि हम किसी

मुल्क से अपनी दोस्ती कम करें । क्योंकि आखिर में यही एक दुनियां का ठीक रास्ता है और खासकर जिस रास्ते पर हम चल रहे हैं । हमारे पड़ौसी देश हैं उनके साथ भी हम दोस्ती और करीब का करीब सहयोग किया चाहते हैं । कुछ पिछले जमाने में हमारे रिश्ते और मुल्कों से करीब हुये आप जानते हैं ।

आपने सुना पंचशील का नाम आपने सुना जिससे हमने बताया कि मुल्कों के बीच में क्या सम्बन्ध होना चाहिए, क्या रिश्ता, सारी दुनियां में हल्के हल्के नये मुल्कों ने भी उसे तसलीम किया हल्के हल्के दुनियां की हवा बदली, हमारी वजह से नहीं, दुनियां में और वाकयात हुये हमें कोई शेखी और गरूर करना नहीं है । अगर हम थोड़ी बहुत इन बातों में मदद कर दें तो काफी है लेकिन खुशी की बात है कि दुनियां की आबो हवा दुनियां की फिजा कुछ पहले से अच्छी है । और जो कौमें और जो मुल्क दुश्मनी से एक की तरफ एक दूसरे की तरफ देखते थे, कुछ उनका डर और उनकी फिक्र कम हुई, और हाथ बढ़ा के कुछ मिलाने को भी तैयार हुये, खुशी है ।

हमारे मुल्क में हर मुल्क से अमन है । लेकिन आज का दिन पन्द्रह अगस्त का दिन, आप जानते हैं कि आप का और हमारा और बहुतों का ध्यान गोआ की सरहद की तरफ होगा । जब हम अपनी आजादी की लड़ाई लड़ते थे क्या आपने या किसी ने दुनियां में सोचा था कि हिन्दुस्तान आजाद होगा और हिन्दुस्तान का एक जरा सा हिस्सा गोआ, या पांडेचेरी या कोईऔर हिस्सा, योरू

या और मुल्कों के कब्जे में होगा । नामुमकिन था यह ख्याल भी । ख्वाब में भी नहीं आया था ।
।तालियां।

जब हम एक यह पांडिचेरी और गोआ सौ दो सौ तीन सौ बरस से रहे अलग पिछले डेढ़/दो सौ बरस कैसे रहे अलग ? इसलिए रहे अलग कि अंग्रेजी साम्राज्य के साये में वो यहां रहे । इसलिए एक बड़ा साम्राज्य यहां था और वह उनकी अपनी हिफाजत में रख सकता था जैसे कि हिन्दुस्तान में अजीब अजीब देशी राज्य थे, उनके साये में रहे । जिस वक्त अंग्रेजी साम्राज्य हटा, कहां रहे वे देशी राज्य जो यहां सौ दो सौ और चार सौ थे । ।तालियां।

तो फिर एक अजीब बात है, कोई साहब हमसे पूछे गोवा की निस्बत कि क्यों आप चाहते हैं कि वो हिन्दुस्तान में मिल जाये । हिन्दुस्तान में मिलने का सवाल क्यों । क्या किसी ने नक्शा नहीं देखा हिन्दुस्तान का और दुनियां का किसी ने देखा नहीं कि वो है कहां, वो हिन्दुस्तान का एक टुकड़ा है । कौन उसको अलग कर सकता है ।तालियां।

हमने आठ बरस आज हम मना रहे हैं । और इस आठ बरस में दुनियां कैसे हमने कितने सब्र से काम किया, किस कदर रोकथाम की क्योंकि हम चाहते थे और हम चाहते है कि यह गोआ का सवाल जैसे कि और सवाल ।शान्ति से और बाअमन तरीकों से हल हो। और मैं आपसे कहना चाहता हूं आज के दिन भी कि हम इस गोवा के मामले में कोई फौजी कार्रवाई नहीं करने

वाले हैं । । हम इनको शान्ति के तरीकों से हल करने वाले हैं । औरकोईधोके में न रहे कि हम वहां फौजी कारंवाई करेगें । मैं इसलिए कहता हूं कि ऐसे धोके में कभी कभी बाहर के लोग आ जाते हैं और कभी कभी हिन्दुस्तान के भी । बाहर के लोग गलत खबरें मशहूर करते हैं कि हम तोप और बन्दूक और टैंक वहां जमा करते हैं और फौजें वो गलत है । कोई फौज आस पास मोआके नहीं है । अन्दर के लोग चाहतेहैं कि कुछ गुलशोर मचा के ऐसे हालात पैदाकरें कि हम मजबूर हो जायें फौज भेजने को । हम नहीं भेजेगें । फौज, हम उसको शान्ति से तय करेंगे, समझ लें सब लोग इस बात को ।॥तालियां॥

और जोलोग इस बात को वहां जा रहे हैं मुबारक हो उनको जाना लेकिन यह याद रखें कि सत्याग्रही अपने को कहते हैं तो सत्याग्रह के उसूल और सिद्धान्त और रास्ते भी याद रखें । सत्याग्रही के पीछे फौजें नहीं चलती हैं न फौजों की पुकार होती है । फिर वो खुद उस मसले को दूसरे तरीके से उसका सामना करते हैं ।

यह तो हुआ लेकिन एक और सवाल है । हमने देखा पिछले जमाने में, कई बार यह सत्याग्रही जो गये थे । उन पर गोली चली और कुछ नौजवान उनमेंसे मरे । लड़ाई में एक दूसरे पर गोली चलती है फौजोंमें और उसकी बरदाश्त करनी होती है । लेकिन एक उसूल हमें सामने रखना है और दुनियां को सामने रखना है कि निहत्थे लोगों पर जिनके हाथ में कोई हथियार नहीं है ।

ऊपर गोली चलाना कहां तक रवा है कहां तक मुनासिब है, किसी मुल्क के लिए। अगर कोईकानून तोड़े इख्तयार है हुकूमत को उनका गिरफ्तार करे अरिस्ट करें जेल भेजें। ये अधिकार हैं लेकिन दुनियां के इन्टरनेशनल कानून में या किसी भी शराफत के कानून में यह कहां तक आया है कि जो लोग हथियार जिनके पास नहीं है। जो लोग हमला नहीं कर रहे हैं, उनके ऊपर गोली चलाई जाये यह गलत बात है। मैं बहुत अदब से यह कहा चाहता हूं कि दुनियां को समझना चाहिए। और पोर्चगीज हुकूमत को समझना चाहिए। कि इस तरह से यह शराफत के खिलाफ बातें नहीं करनी चाहिए।

हमारे उनमें एक मुठभेड़ समझिये लेकिन कुछ भी उनकी राय हो। हम उसको शान्ति से हल किया चाहते हैं और यकीनन शान्ति से हल करेंगे।चाहे कित्ता ही वक्त लगे। और आप याद रखें कि ऐसे मामलों में यह समझना कि जादू से और तेजी से बड़े मसले हल होते हैं, यह गलत है। अगर पक्की तौर से कोई बात हम और आप किया चाहते हैं तो उसमें जल्दबाजी से अक्सर नहीं होती। हमें इन्तजार करना होता है। लेकिन जो इन्तजार से बात होती है। इत्मीनान से वह ज्यादा मजबूत और ज्यादा पक्की होती है।

मैंने आप से कहा पंचशील का जिक्र किया, कुछ दुनियां की तरफ ध्यान दिलाया जहां का वायुमंडल कुछ बदला है। अपने देश की तरफ आप देखेंक्योंकि आखिर में हम अपने देश में क्या करते है। उस पर दारोमदार है हमारे लाखों करोड़ों आदमियों का और हमारी हैसियत और

और दुनियां में क्या होती है। हमारे जबानी बातें से हमारे नारों से तो हैसियत दुनियां में बढ़ती नहीं है। वो तो जो हम अपने मुल्क में करते हैं उससे उसका अन्दाज होता है।

मैं समझता हूं पिछले आठ बरस में हमारे मुल्क ने बहुत कुछ किया बहुत कुछ हमने बुनियादे डाली अपने मुल्क के आइन्दा की इमारत की, और अब वक्त आया है कि उस इमारत पर आगे बनायें जोरों से बनायें। बुनियादें मजबूत हो गयी है। और भी मजबूत करनी है।

एक सिलसिला पंचवर्षीययोजना का खत्म हो रहा है। दूसरा चन्द महीनों में शुरू होगा उसके लिए तैयार होना है, कमर कसनी है और अगर कुछ तकलीफ उठानी है। तो तकलीफ भी उठानी है। क्योंकि हम हिन्दुस्तान की इमारत को खाली इस समय रहने को नहीं बल्कि कल और परसों के लिए आइन्दा सालों के और पुश्तों के लिएबना रहे हैं। मजबूत बनानी है और उसके लिए मेहनत करनी है।

पंचशील का मैंने चर्चा किया इस माने में कि रिश्ते मुल्कों के एक दूसरे से क्याहो। लेकिन एक शब्द जो पुराने जमाने में इसका इस्तेमाल हुआ था वो दूसरे माने में हुआ था, वो इस माने में कि हम अपने ऊपर काबू किस्ती करें, आपस में हम कैसे रहे। बाहर हम क्या शान दिखाये। अगर अन्दर दिल में हमारी शान नहीं। बाहर हम शान्ति और अमन की बातें क्याकरें। अगर हमारे दिल में शान्ति और अमन नहीं है। अगर हम अपने आपस में सहयोग नहीं कर सकते। तब बाहर हम औरों कोनेक सलाह

क्या दें । इसलिए यह और भी जरूरी है । कि हम अपनी कमजोरियों को दूर करें । यह जबर्दस्त देश हमारा हिन्दुस्तान कित्त इसके चेहरे हैं कित्ते रूप है । तरह तरह के इसमें मजहब हैं धर्म हैं राय है रंग हैं सूबे हैं । प्रान्त हैं प्रदेश हैं इस सबको मिला के हमने आजाद हिन्दुस्तान बनाया एक बड़ी बिरादरी भाइयों और बहनों की जिसमें बीच में कोई दीवारें नहीं होनी चाहिए । न सूबे की न प्रदेश की न मजहब की, न जाति की, और जो दीवार है असल में हमारे बीच में आती है उसको हमें गिरानी है । जाति भेद आता है हमारे बीच में जो एक फिरके को दूसरे से अलग करें इसको हमें खत्म करना है । काफी दिन तक इसने हिन्दुस्तान को कमजोर किया--दुर्बल किया । तो हमें इस हिन्दुस्तान में अलग अलग शक्लें और रूप तो रखने हैं । लेकिन उसी के साथ हमेशा याद रखना है कि हम एक बिरादरी हैं और मिलकर हमें बढ़ना है और यह जो लफ्ज नई मंजिल हमारे सामने हैं उसमें सभी को आगे बढ़ना है, करोड़ों को ।

दूसरी बात यह कि जो काम हम करें---वो सब शान्ति से और अमन तरीको से । यह मैं खास आपको याद दिलाना चाहता हूं क्योंकि हम लम्बी चौड़ी बातें शान्ति की करते हैं । और अक्सर एक दूसरे के खिलाफ हाथ उठा लेते हैं । आप अन्दाज ---क्या बात है । यह अभी दो रोज की बात है पटना शहर में यह हुआ । क्या बात है कि इतनी जल्दी हाथ उठता है । क्या बात है ? कि हमारे विद्यार्थी इन बातों में आजकल इतनी जल्दी फंस जाते हैं ? क्या उनमें सब्र नहीं समझ नहीं---क्या वो जानते नहीं कि वो आजाद

हिन्दुस्तान के रहने वाले हैं, क्या उनमें अभी आजादी की कोई हवा उन्हें नहीं लगी है और कुछ पुराने तरीकों पर चलते हैं । सोचने की बात है वह जमाना गुजरा कि आपस में कशमकश हो चाहे मजदूर भाइयों की और औरों की चाहे किसी की और खासकर यह सवाल कि विद्यार्थी लोग कभी अपने पढ़ाने वालों के मुकाबले में, कभी किसी और के हाथ उठायें तो बदनाम अपने को करते हैं और अपने देश को करते हैं, और बजाये इसके कि अपने को तैयारकरें आइन्दा की जिम्मेदारियों के लिए जो उन्होंने उठ है । इसलिए मेरी दरखास्त है आपसे सभी से और खासकर नौजवानों से कि अपनी जिम्मेदारीयां वो महसूस करें, आजकल के जमाने को देखें, क्या जमाना है यह ।

एक सारी दुनियां ने नई तरफ करवट ली है, यह एटम का जमाना है ऐटोमिक एनर्जी का जमाना है । जरा दिमाग को भी पलटना है बदलना है, और उन छोटी बातों से, छोटे झगड़ों से, छोटी बहसों से निकालना है । कहां तक जो देश इस जमाने को समझता है । वो देश आगे बढ़ता है । मैं चाहता हूं कि आप और हम औरहिन्दुस्तान के रहने वाले इन बातों को समझें और हम फायदा उठायें कि नई नई ताकतें जो पैदा हुई हैं । तो फिर यह जरूरी बात है । कि हम अपने मुल्क में हर सवाल को अमन तरीकों से फैसल करें ।

अभी थोड़े दिन बाद एक और पेचीदा सवाल हमारे मुल्क के सामने आने वाला है । कुछ दिन हुये एक

कमीशन मुकर्रर हुआ था आपको यादहोगा । स्टेट्स रिओर्गनाईजेशन कमीशन उसका नाम था--यानी जो हिन्दुस्तान के अलग अलग सूबे हैं प्रदेश हैं उनमें अदला बदली की जाये की नहीं । और अगर की जाये तो क्या की जाये । हमने तीन ऊँचे दर्जे के आदमियों को चुना, जिनमें कोई तरफदारी नहीं थी । इस सवाल में । और उनसे कहा कि वो जांच करें तहकीकात करें । और हमें सलाह दें और वो यह कर रहे हैं साल डेढ़ साल से । और कुछ दिन बाद, दो महीने के अन्दर शायद उनकी रिपोर्ट और उनकी सिफारिशें हो । मैं नहीं जानता कि वो क्याहोगी सिफारिशें मैं, कोर्य उस पे राय नहीं दे सकता । लेकिन जो बात मैं आपसे कहना चाहता हूं वो यह कि इस मसले में जो बहुत गर्मा गर्मी होती है, चाहे पंजाब से लेके दक्खिन तक औरपूरब से पश्चिम तक कित्ती ही गर्मागर्मी हो यह जो मसले निकलेगें, और उनकी सिफारिशें आयेगी, हमें उसे इत्मीनान से, शान्ति से तय करना है और जो शख्स उसके खिलाफ झगड़ा फिसाद करें वो अपने मुल्कका भला नहीं चाहता, क्यों कि आखिर में यह अलग अलग प्रदेश औरप्रान्त हैं, अलग देश तो नहीं है । यह तो अलग अपने इत्मीनान के लिए, आसानी के लिए, हमने अपने देश के अलग अलग टुकड़े बनाये हैं । कोई फैसला/ऐसा नहीं हो सकता जी कि हर एक को पसन्द करें, हो ना मुमकिन है ।लेकिन कोशिश की जायेगी और मैं उम्मीद करता हूं जो कमीशन है वो भी पूरी कोशिश कर रहा है कि एक मुनासिब जो अच्छे से अच्छा फैसला हो सकता है ।उसकी

सिफारिश करें । जो कुछ हो उसे हमें सोच समझ के शान्ति से मंजूर करना है । एक दूसरे से बात करके । कोई सवाल झगड़े का नहीं उठना चाहिए । ऐसे मौके पर । हमें दुनियां को दिखाना है कि हम किस तरह से अपने मसलों को हल करते हैं । शान्ति से इत्मीनान से । ताकत की यह निशानी है । ताकत की निशानी आजकल एक नारा उठाना और गुल मचाना नहीं है । यह बच्चों की बातें हैं । हमारा मुल्क चाहे आठ वर्ष हिन्द की उम्र हो । एक बुजुर्ग मुल्क है, एक शानदार मुल्क है एक उसकी आवाज गम्भीर होती है । खाली चीखने की नहीं होती है, हाय हाय करने की, हाय हाय करने का वक्त नहीं है । इत्मीनान से शान्ति से, अपनी ताकत बढ़ाना शराफत से और देशों के साथ दोस्ती करना । और इस तरह से मुल्क को बढ़ाना ----औरजो मसले आये और उनको शान्ति से और मिलकर फैसल करना ।

तो फिर पंचशील मैंने आपसे कहा इस पंचशील के दो तरफ है । एक और और मुल्कों के साथ रिश्ता दोस्ती का, एक दूसरे के साथै दखल नहीं देना, एक दूसरे के बराबर रहना और मदद करना । दूसरा उसका जो पंचशील का रूख है । वह हमाराअन्दर का है कि हम अपने को ठीक बनायें, तैयार करें, गलत रास्ते पर न चलें । मिल करे चलें । एकता से चलें, और सारे हिन्दुस्तान को एक बड़ी बिरादरी बनायें यह सबक पुराना हमारा है। हजारोंबरस का यह सबक आज का है हमाराअपने लिए, किसी दूसरे के लिए नहीं है ।

क्योंकि याद रखिये हमें कुछ हक हैं अपने को सिखाने का औरों को सिखाने का हमें हक नहीं है । ठीक नहीं है कि हम इस गरूर में पड़ें कि हम औरों को बतायेंगे । अगर हम सबक सीखते हैं तो अपने अमल से हम दिखा दे औरों को हम क्या दें और क्याहोना चाहते हैं ।

इसलिए आज इस आठवीं सालगिरह को आजाद हिन्द की । हम अगर इस की खुशी मनायें तो ठीक है । और हमें कुछ इत्मीनान भी करें, पिछले आठ बरस के काम का तो वो भी ठीक है । लेकिन असल में हमें ध्यान देना है । क्या हमने नहीं किया, क्या हमें काम पूरा करना है । एक मंजिल पूरी हुई । तो दूसरी मंजिल पे जाना हैऔर किस तरह से जाना है ----और जाना है शान्ति से, अमन से । हम कुछ ध्यान करें वो लोग जिनकी मेहनत से, जिनकी कुर्बानी से जिनके त्याग से और शहादत से । मुल्क आजाद हुआ । हम कुछ हिन्दुस्तान की पुरानी आवाज को भी सुनें । और जो दुनियां की नई आवाजें है उसको भी कान में लायें ।

पुरानी आवाज बुजुर्गों की हमारे कान में है । अभी एक सालभर बाद हम इस मुल्क में और दुनियां में एक चीज मनाने वाले हैं । एक हिन्दुस्तान का जबर्दस्त बड़े से बड़ा हिन्दुस्तान का पैदा हुआ आदमी उसके मरे ढाई हजार बरस अगले साल होंगे, गौतम बुद्ध और उसको हमअगले साल मनायेंगे , यहां और और मुल्कों में, और अगर हम उसको मनायेंगे तो जरा

उनके जो ऊंचे सिद्धान्त इस हिन्दुस्तानी ने, इस भारती ने दिये थे । उनको भी याद करें और आपको याद करें और जो हमारी आंखों के देखे हुये । हमारे साथ काम किये हुये राष्ट्र पिता गांधी उनकी भी हम यादकरें । क्योंकि आखिर जो कुछ हमने आजकल लड़ाई है, हिन्दुस्तान में उनकी दी हुई, उनकी दिखाई हुई । उनकी सिखलाई हुई है । अगर हम इन उसूलों पे चलते हैं तो हमारे कदम मजबूत रहेगें । दिल मजबूत रहेगें । आंखे सीधी तरफ देखेंगी । ये बातें हम आप सोचें और सोच के आगे बढ़ें ।

जयहिन्द ।

मेरे साथ तीन बार जयहिन्द कहिए जयहिन्द, जोर से जयहिन्द । जयहिन्द । जयहिन्द ।

=======